# हिन्दुत्ववादी राजनीति का अभ्युदय एवं मतदाताओं का दृष्टिकोणः उत्तर राम जन्म भूमि आन्दोलन के संदर्भ में गोरखपुर जिले का अध्ययन

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,लखनऊ से
राजनीति विज्ञान विषय में पीएच०डी०
की उपाधि हेतु प्रस्तुत

## शोध संक्षिप्तिका

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996


शोध पर्यवेक्षक
**डॉ0 सिद्धार्थ मुखर्जी**
(सहायक आचार्य)
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधकर्ता
**प्रमोद कुमार पाण्डेय**
नामांकन संख्याः 1188/15
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ



राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
लखनऊ–226025
2021

# शोध संक्षिप्तिका

ऐतिहासिक काल से ही धर्म और राजनीति एक दूसरे से संबंधित रहे हैं। प्रत्येक प्राचीन राजनीतिक सत्ता जिसका अस्तित्व मौजूद है , उसमे धर्म का भी अस्तित्व मौजूद है। हिंदुत्व की राजनीति में हिन्दू धर्म केंद्र में रहता है। हिंदुत्व शब्द या पद का प्रयोग विनायक दामोदर सावरकर ने 1923 में अपनी विचारधारा की रूप रेखा बनाने में किया। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने 11 दिसम्बर 1995 को मनोहर जोशी के वाद में हिंदुत्व को जीवन का एक तरीका माना । भारतीय जनता पार्टी ने अपने अधिकारिक आदर्श में 1989 में इसे शामिल किया। विनायक दामोदर सावरकर को इसका प्रतिपादक माना जा सकता है। विनायक दामोदर सावरकर जो कि इटली के क्रांतिकारी मेजिनी के कार्यों और जीवन से प्रभावित थे , उन्होने 1904 में अभिनव भारत संस्था की स्थापना की। अपने समय में यह भी हिंदुत्व की राजनीति के लिए भारत की भूमि को उर्वर करने का कार्य किया।

"हिंदुत्व" शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से "हिंदुत्व" शब्द का विश्लेषण करते हैं। संस्कृत भाषा में कोई भी शब्द (जिसे संस्कृत भाषा में ''पदम'' कहा जाता है) एक" प्रकृति" और एक से अधिक' प्रत्यय" के योग से बनता है। "हिंनदुन्" मूल में एक "सुप" प्रत्यय के योग से "हिन्दू" बनता है और इसी 'हिन्दुन" मूल में एक "तद्धित" प्रत्यय के योग से" हिंदुत्व" बन जाता है।

हिंदूवाद के अंतर्गत हिन्दू धर्म जो भारत का प्राचीनतम धर्म है, को केंद्र में रखकर किया जाने वाला विचार विमर्श है। इसमें बहुत से संप्रदाय आते हैं और इन संप्रदायों में से किसी एक का पालन करने वाले हिन्दू हैं। जबकि हिंदुत्व एक राजनीतिक विचारधारा है जिसका प्रतिपादन 1924 विनायक दामोदर सवारकर ने अपनी पुस्तक हिंदुत्व में किया था। सावरकर के हिंदुत्व की परिभाषा के अनुसार —"हिन्दू वह है जो सिंधु नदी से समुद्र तक के भारत वर्ष को अपनी पितृ भूमि और पुण्य भूमि के रूप में मानता है। अतः इसका धर्म से कोई सीधा संबंध नहीं है । हिंदुत्व भारत में 'हिन्दू राष्ट्रवाद' का प्रमुख 'कार्य' है ।

हिंदुत्व पद का  निर्माण 19 वीं शताब्दी का है । पहली बार 1870 के दशक में  वंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास 'आनंदमठ' में इस शब्द का प्रयोग किया गया । 1890 में महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक और बंगाल में चंद्र नाथ बसु ने इस शब्द के प्रयोग का प्रचलन में लाने का श्रेय जाता है । सावरकर ने हिंदुत्व का प्रयोग अपनी विचारधारा की रूपरेखा बनाने में किया । इसके बाद हिंदुत्व सामान्य शब्द या पद न रहकर एक विशिष्ट विचारधारा से संबंधित हो गया । सावरकर ने हिन्दू जीवन- पद्धति को अन्य जीवन पद्धतियों से अलग और विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया जिससे उन्हे हिंदुत्व विचारधारा के प्रवर्तक और सिद्धांतकार के रूप में माना जाने लगा । उदारवादीयों के लिए वरीयता क्रम में हिंदूवाद पहले है और हिंदुत्व बाद में और हिन्दू राष्ट्रवादियों के लिए हिंदुत्व का स्थान प्रथम है इसके बाद हिंदूवाद । हिन्दू उदारवादी भारत के मुस्लिम शासन काल के प्रति सौम्य दृष्टिकोण रखते हैं जबकि अंगेजों के शासन काल के प्रति अपेक्षाकृत गंभीर दृष्टिकोण रखते हैं जबकि हिंदुत्व के इतिहासकार मुस्लिम शासन काल के प्रति अधिक गंभीर दृष्टिकोण रखते हैं अपेक्षाकृत अंग्रेजों के शासन काल के ।

राष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व की राजनीति का उदय 1925 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना  से एक संगठन के स्वरूप में उभरकर सामने आया । इसकी सामाजिक गतिविधिवों से राजनैतिक प्रभाव भी उत्पन्न हुआ । विनायक दामोदर सावरकर और हेडगेवार और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघऔर इसके प्रथम राजनीतिक स्वरूप भारतीय जनसंघ , 1980 से भारतीय जनता पार्टी  इसे राजनीतिक स्तर पर आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है । हिंदुत्व की राजनीति भारतीय संविधान के अनुच्छेद 44  अर्थात "समान नागरिक संहिता " का समर्थन करता है ।

राष्ट्र  एक जनसमूह को कहते हैं , जिनकी एक निश्चित पहचान होती है , जो उन्हे राष्ट्र से जोड़ती है । यह जनसमूह साधारणतया समान भाषा ,धर्म, इतिहास,नैतिक आचार या मूल उदगम से होता है ।राजृदीप्तों अर्थात  'राजृ'  धातु से कर्म में ' ष्ट्रन ' प्रत्यय लगाने से संस्कृत में राष्ट्र शब्द बनता है अर्थात विविध संसाधनों से सम्पन्न साँस्कृतिक पहचान वाला देश ही राष्ट्र कहलाता है । राष्ट्र , जीवंत, सार्वभौमिक , युगांतकारी और हर विविधतावों को

समाहित करने की क्षमता रखने वाला एक दर्शन है । एक राष्ट्र बहुत से राज्यों में बंटा हों सकता है तथा वे एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं , जिसे राष्ट्र कहा जाता है ।

राज्य अर्थात स्टेट शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इटली के विद्वान मैकियावली द्वारा किया गया था। अपनी कृति 'द प्रिंस ' में 1531 में उन्होने राज्य शब्द का प्रयोग किया । इससे पूर्व राजनीतिक समुदाय के लिए पोलिश , रेस पब्लिका , सिविटास , रेगनम , आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता था । इससे यह संकेत मिलता है कि राज्य शब्द के पूर्व भी राज्य का अस्तित्व था । राज्य अपने स्वरूप में राजनीतिक तथा राष्ट्र अपने स्वरूप में भावनात्मक होता है । राज्य के निर्माण आधार में कानून है , राष्ट्र के निर्माण आधार में भावनाए होती हैं । राज्य बाध्य करता है , राष्ट्र माँग करता है । राज्य के लिए संप्रभुता एक अनिवार्य तत्व है, कोई राष्ट्र परतंत्र भी हो सकता है और स्वतंत्र भी । राज्य अपने स्वरूप से राजनीतिक तथा राष्ट्र का स्वरूप लगभग आध्यात्मिक होता है । राज्य के तत्व सुनिश्चित होते हैं ( जनसंख्या, निश्चित भू - भाग , सरकार व संप्रभुता ) । राष्ट्र के तत्व होते हैं, परंतु सुनिश्चित नहीं । राज्य, राष्ट्र से वृहद हो सकता है ( प्रायः आज़ के राज्य बहुराष्ट्रीय हैं ) और लघु भी । राज्य मुख्यतया राजनीतिक होता है, केवल संयोगवश साँस्कृतिक होता है जबकि राष्ट्र मुख्यतया साँस्कृतिक होता है केवल संयोगवश राजनीतिक ।

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही विविध धर्मों का प्रांगण रहा है । प्राचीन भारत में ही हिन्दू, जैन, और बौद्ध धर्मों का उदय हुआ, परंतु इन सभी धर्मों और संस्कृतियों का पारस्परिक सम्मिश्रण और प्रभाव, प्रति प्रभाव इस प्रकार हुआ कि लोग भले ही विभिन्न भाषाए बोलते हैं, विभिन्न धर्मों को मानते हैं, विभिन्न सामाजिक रीति रिवाजों पर चले हों पर समूचे राष्ट्र में सभी की एक सामान्य जीवन पद्धति है । भारत वर्ष की एकता को विदेशियों ने भी स्वीकारा है । वे सर्वप्रथम सिंधु तटवासियों के सम्पर्क में आए और इसीलिए पूरे राष्ट्र को ही उन्होने सिंधु या इंडस नाम दिया । ईरानी भाषा में हिंद शब्द संस्कृत के सिंधु से निकला है ।इस शब्द का प्रयोग छठी सदी ई. पू. के ईरानी अभिलेखों में सिंधु क्षेत्रों के लिए किया गया है । काल क्रम के साथ हमारा देश इंडिया के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

राष्ट्र की अवधारणा भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही रही है । प्राचीन भारतीय ऋषि महर्षियों ने इसीलिए एक राज्य विशेष की सीमा से परे पूरे जगत के कल्याण का दर्शन अंगीकृत कर रखा था ।राष्ट्र में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं जिन्हे सांझा करने के कारण ही वे राष्ट्र कहलाते हैं । जैसे साझा मूल, नस्ल, वंश, भाषा, धर्म, इतिहास, संस्कृति आदि । इन तत्वों के साथ ही साथ सांझा भूत जाति और धरोहर भी सांझा करते हैं । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एम. जी. वैद्य के अनुसार राज्य, एक राजकीय व्यवस्था है जो कानून के बल पर चलती है और कानून को प्रभावी बनाने के लिए उसके पीछे दंड देने की शक्ति रहती है । जबकि राष्ट्र यानि लोग़ होते हैं , लोगों का राष्ट्र बनने के लिए तीन प्रधान शर्ते हैं :

पहला, जिस भूमि पर लोग रहते हैं , उस भूमि के प्रति उनकी भावना । उनको अपनी भूमि माता के समान पवित्र और वंदनीय लगनी चाहिए । वह मातृ भूमि होनी चाहिए ।

दूसरी शर्त के रूप में एक इतिहास होना चाहिए । इतिहास की घटनाए जैसे आनंदित करने वाली वैसे ही दुखदायी भी होती हैं , ये घटनाए विजय की होती हैं तो पराजय की भी होती हैं। जिनको ये अपने इतिहास की घटना लगती है , उनका राष्ट्र होता है ।

तीसरी और सबसे प्रमुख शर्त यह है कि इनका मूल्यअवधारणा यानि वैल्यू सिस्टम समान होता है, और इस मूल्यअवधारणा से जिनके अच्छे या बुरे ठहराने के मापदंड समान होते हैं, उनका राष्ट्र बनता है ।यह मूल्य व्यवस्था ही संस्कृति होती है । ये जो लोग हैं, उनका नाम हिन्दू है, इसलिये यह हिन्दू राष्ट्र है ।

संघ के नाम में ही राष्ट्रीय शब्द है वह केवल राष्ट्र की चिंता करता है । एक राष्ट्र के लिए एक ही धर्म होना अनिवार्य नहीं, एक ही भाषा होना आवश्यक नहीं या एक ही वंश या नस्ल का होना आवश्यक नहीं है ।संघ आगे कहता है, हिन्दू धर्म नहीं, अनेक धर्मों का संघ है । धर्म का अंग्रेजी में रिलिजन या मज़हब ऐसा अनुवाद करने के कारण ही अनेक गलत धरनाए बनी हुई हैं। हिन्दू मज़हब नहीं वह एक मूल्य व्यवस्था का वाचक है, अर्थात यह संस्कृति का बोधक है । इस व्यवस्था में विविधता, फ़िर वह विविधता ईश्वर के नाम की हो,

उसके उपासना के आकार की हो या उसके लिए बनाये गए पूजा स्थल या प्रार्थना स्थल की हो, का सम्मान है । यही हिन्दू संस्कृति है । इसी का नाम हिंदुत्व है ।

## निष्कर्ष

हम अध्ययन के दौरान उत्पन् मामलों को प्रकाश में लाना चाहते हैं, हिंदू से संबंधित जुड़ाव की पहचान, हिंदुत्व विचार विमर्श, इसका राजनीतिक मंच और संप्रदायिक उलझाव और हिंदुत्व द्वारा उत्पन्न चुनौतियां जो कि एक वैचारिक रूप में सामने आने वाली चुनौतियां हैं। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, उपनिवेशवाद के आधुनिकरण के प्रभाव में एक बिखरा हुआ हिंदू संगठन अपने आपको प्रतिबिंबित करने लगा और अन्य तरह की विचारधाराओं और दृष्टिकोण के साथ संबंध का सुझाव दिया । इसकी प्रतिक्रिया कई गुना थी जो आधुनिकता के औपनिवेशिक संस्करण में उनके लिए उपलब्ध परंपराओं में, सुधारों के लिए कहती थी और ऐसे भी कुछ लोग थे जो आधुनिकता को को एक सहयोगी के रूप में नई खोज की ओर अग्रसर मानते थे । हिंदू पहचान को एक जटिल और बहुमुखी समझ के परिणाम स्वरूप प्राप्त किया गया था ,हिंदू धर्म में इस तरह के विचार और अवसर एक गहरे जुड़ाव के साथ जुड़े होते हैं, जो हिंदू वाद, दार्शनिक और ऐतिहासिक परियोजना के रूप में जाना जाता है और इस तरह की परियोजनाएं अपने जैसी अन्य परियोजनाओं से अपनी तुलना करती है । हिंदू विचार विमर्श ने इस तरह के प्रयासों को एक विशिष्ट मोड़ प्रदान किया । हमेशा एक ऐसे राज्य के शासन की आवश्यकता का स्वपन देखा जो हिंदू राष्ट्र और संस्कृति को आगे बढ़ाएं । इस तरह हम देखते हैं विनायक दामोदर सावरकर और जी .वी . गोलवाँकर के विचारों में कोई गंभीर असहमति नहीं है । हिंदुत्व, विचार विमर्श की कई मुख्य विषयों को दरकिनार या बाधित करता है जो पहले अस्तित्व में थे । हिंदू वाद की जो एक सूत्रीय विकसित परंपरा रही है, उसके एक प्रखर आवाज के रूप में हिंदुत्व उभरा है । हिंदू वाद की अधिकतर प्रवृतियां विभाजन कारी, लेकिन संघ परिवार ने अपने हस्तक्षेप से उनके मूल्यों और विश्वास को अपने अन्य घटकों द्वारा प्राप्त करने में सफल रहा है । राष्ट्र धर्म ,राज्य धर्म व अल्पसंख्यक इत्यादि अन्य मुद्दों के साथ उतना ही अपने को संबंधित किया, जितना उन पर प्रभाव पड़ता है । एकात्म मानववाद इनकी आर्थिक नीतियों पर मार्गदर्शन देने में असमर्थ रहा है । स्वदेशी मंच संघ परिवार का यह अंतर करने में असफल हो गया, कि

क्या शामिल किया जाए और क्या निकाला जाए जिन मुद्दों पर भारतीय जनता पार्टी का कोई स्थाई विचार नहीं है इस पर वैश्वीकरण ने बहुत प्रभावित किया है । संघ परिवार ने अपने आप को इतना विस्तृत कर लिया है, पिछले कुछ वर्षों से इसकी गतिविधियां इतनी व्यापक हो चुकी है कि एक सामान्य नागरिक के जीवन का बड़ा हिस्सा संघ परिवार के किसी न किसी घटक से प्रभावित होने लगा है संघ परिवार ने ना सिर्फ राष्ट्रीय अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रभावपूर्ण उपस्थिति प्राप्त कर ली है, जिससे वैश्विक पटल पर संघ परिवार एक बड़ी ताकत बनकर उभरा है। नाथ संप्रदाय की सिद्ध पीठ, एकमात्र हिंदू राष्ट्र नेपाल से सीमावर्ती स्थल होने के कारण, तराई का इलाका बहुसंख्यक हिंदू जनसंख्या, पीठ के महंत की राजनीति में सक्रिय रुचि के कारण गोरखपुर हिंदुत्व की राजनीति के लिए प्राचीन काल से ही उर्वर रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इस स्थल के महत्व को देखते हुए 1939 में नानाजी देशमुख जैसे राष्ट्रवादी स्वयंसेवक को गोरखपुर में संघ के प्रचार हेतु भेजा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा स्थापित पूरे भारत में प्रथम सरस्वती शिशु मंदिर 1952 में गोरखपुर में ही स्थापित हुआ जिसका उद्घाटन स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेई जी ने किया था। 1932 में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षण परिषद के अंतर्गत संचालित शैक्षणिक और चिकित्सा संस्थान हिंदुत्व की हमेशा से ही जीवंत रखते हैं। 1949 में बाबरी मस्जिद मुद्दे को तत्कालीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज काफी प्रमुखता से उठाया था अयोध्या आंदोलन के बाद तत्कालीन महंत अवैध नाथ जी महाराज ने राम मंदिर निर्माण समिति का अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। हाल ही में 5 अगस्त 2020 को अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण स्थल पर भूमि पूजन कार्यक्रम में गोरखपुर स्थित गोरक्ष पीठ की मिट्टी पूरे धार्मिक क्रियाकलाप के साथ अयोध्या जी में ले जाकर राम मंदिर भूमि पूजन कार्यक्रम में श्री राम मंदिर निर्माण में समर्पित किया गया। गोरखपुर स्थित पीठ के सक्रिय जुड़ाव व जीवंतता का सिद्ध प्रमाण है। मकर संक्रांति के अवसर पर 1 माह तक चलने वाला मकर संक्रांति मेला किसने पड़ोसी राष्ट्र नेपाल पड़ोसी राज्य बिहार व नाथ संप्रदाय को में आस्था रखने वाली विशाल जनसमूह के लिए किसी भी कुंभ से कम महत्व नहीं रखता। इस वर्ष के प्रारंभ में ही 24 जनवरी 2020 से 27 जनवरी 2020 तक अखिल भारती कुटुंब प्रबोधन समिति अंतर्गत कार्यक्रम गोरखपुर में ही संपन्न हुआ किस मी राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रमुख श्री मोहन भागवत ने भी समारोह को संबोधित किया इस सम्मेलन में कुटुंब प्रबोधन और सामाजिक

समरसता पर सबसे अधिक बल दिया गया सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले जी ने कुल 3 दिनों तक विभिन्न कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने गोरखपुर में ही 26 जनवरी 2020 को ध्वजारोहण किया राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए गोरखपुर के महत्व को इंगित करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं। ग्राम विकास पर्यावरण संरक्षण सामाजिक समरसता और कुटुंब प्रबोधन पर गोरक्ष प्रांत और अवध प्रांत और काशी प्रांत तथा कानपुर प्रांत के पदाधिकारियों को गोरखपुर में ही विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति जागरूक रहने पर सक्रिय रहने पर बल दिया गया ।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य, गोरखपुर में उपस्थित हिंदुत्व राजनीति की पृष्ठभूमि की पहचान, और हिंदुत्व राजनीति का गढ़ गोरखपुर का बनना, यहा पर उपस्थित संस्थानों की सक्रिय उपस्थिति, जिसका विस्तृत वर्णन अध्याय 4 में किया गया है। 1991 के राम जन्म भूमि आन्दोलन के बाद गोरखपुर में हिंदुत्व राजनीति के तत्व कैसे इसे अजेय बना दिये व हिन्दुत्व राजनीति ने क्षेत्र विशेष की विकास की आवश्यकता से किस प्रकार सामंजस्य बैठाया इस प्रश्न का भी समाधान अध्याय 4 गोरखपुर में हिन्दुत्व की राजनीति का उदय: एक एतिहासिक विश्लेषण व उपस्थित संस्थानों का योगदान में मिलता है । हिंदुत्ववादी संगठनो द्वारा चलाया जाने वाला कार्यक्रम वर्ष भर चलाना व हिन्दुत्व की राजनीति जाति को संगठित कर देती यह अध्याय 5 हिन्दुत्व की राजनीति व उसका क्षेत्रीय मातदाता पर प्रभाव से इन प्रश्नों का समाधान मिल जाता है।

शोध परिकल्पना का परीक्षण ;

ऐतिहासिक परिकल्पना गोरखपुर हिंदुत्व की राजनीति के लिए हमेशा उर्वर रहा है । प्राचीन काल से ही नाथ संप्रदाय के सिद्ध पीठ पड़ोसी हिंदू राष्ट्र नेपाल से सीमावर्ती जिला होने के कारण विश्व प्रसिद्ध धार्मिक पुस्तक प्रकाशक गीता प्रेस की उपस्थिति नानाजी देशमुख जैसे राष्ट्रवादी संघ का गोरखपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक बन कर आना इत्यादि गतिविधियां गोरखपुर को हिंदुत्व की राजनीति के लिए हमेशा से ही उर्वर रखती रही हैं।

संस्थागत परिकल्पना; गोरखपुर में सतही स्तर पर हिंदुत्ववादी संगठनों की उपस्थिति हिंदुत्व की राजनीति के लिए सहायक है । गोरखपुर में 1932 में स्थापित महाराणा प्रताप शिक्षण परिषद, विभिन्न शैक्षणिक संस्थान और चिकित्सालय 1939 में राष्ट्र राष्ट्र संघ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक

के रूप में नाना जी देशमुख की का गोरखपुर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा 1952 में सरस्वती शिशु मंदिर की गोरखपुर में स्थापना जो की उस समय पूरे भारतवर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक द्वारा स्थापित प्रथम सरस्वती शिशु मंदिर था संस्थागत रूप से हिंदुत्व की राजनीति के लिए गोरखपुर को कैसे अनुकूल बनाया इसका जीवंत प्रमाण है। 2002 में योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा स्थापित हिंदू नवयुवकों का संघ हिंदू युवा वाहिनी अपने को का ग्राम स्तर तक जाकर नागरिकों से अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों द्वारा सीधा संपर्क रखता है इन सब संस्थागत हिंदुत्ववादी संगठनों की जीवंत उपस्थिति कारण उपस्थिति के कारण गोरखपुर में हिंदुत्व की राजनीति हेतु संस्थाएं उपस्थित है।

जनसांख्यिकीय परिकल्पना : गोरखपुर में जनसांख्यिकीय संरचना हिंदुत्व की राजनीति की पक्षधर है, मतदाता, विशेष कर महिला मतदाता धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती हैं।

जनसांख्यिकी गोरखपुर में हिंदू धर्मावलंबियों की संख्या 90% होने के कारण हिंदू धर्म के मानने वालों की प्रधानता है हिंदू राष्ट्र नेपाल की जनता व राज परिवार में भी इस नगर के प्रति गहरी आस्था है। एक सामान्य हिंदू परिवार में महिलाएं अधिक धार्मिक होती हैं इस तरह महिला मतदाता के रूप में धार्मिक प्रभाव में जल्दी आ जाती हैं।" महिला, परिवार और राष्ट्र के लिए प्रेरित करने वाली एक महत्वपूर्ण बल है, इसलिए यदि महिला बल जागरूक न हुआ तो समाज प्रगति नहीं कर सकता - लक्ष्मीबाई केलकर( राष्ट्र सेविका समिति संस्थापक) इसी कथन को ध्यान में रखकर गोरक्ष पीठ ने महिलाओं की धार्मिक भावनाओं को समझते हुए क्षेत्र की महिलाओं का एक पृथक संघ बनाया जो पारिवारिक स्तर पर पीठ की धार्मिक सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों से सीधा जुड़ाव रखता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सहायक वाहिनी जैसी दुर्गा वाहिनी सेवा भारती विद्या भारती की तरह महिलाओं का तंत्र अपने परिवार में धार्मिक रूप से भावनात्मक होने के कारण पारिवारिक का स्तर पर पूरे परिवार को हिंदुत्व की तरफ उन्मुख करती हैं। इनकी जीवंत उपस्थिति चुनाव के समय पूरे परिवार को धार्मिक रूप से बाँध देती है। इसका जीवंत प्रमाण गोरखपुर नगर निगम के चुनाव में श्रीमती अंजू चौधरी जो वर्तमान में राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष भी हैं और डॉक्टर सत्या पांडे भारी मत से विजयश्री हासिल कर महापौर का पद को सुशोभित कर चुकी हैं। इस तरह हम देखते हैं कि मेरी तीनों ही शोध परिकल्पना, गोरखपुर की भूमि में सिद्ध हो रही हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि कुल मिलाकर

मतदातावों का दृष्टिकोण यह सुझाव देता है कि हिंदुत्व की विचारधारा और इसकी संस्थाए नगर क्षेत्र में रहने वाले मतदातावों पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखते हैं । यद्यपि हिंदुत्ववादी संस्थाए ग्रामीण क्षेत्र के मतदातावों के भी जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। जो कि अध्ययन से स्पष्ट रूप से देखने में आता है। साँस्कृतिक और धार्मिक संस्थाए मतदातावों का सामाजिकरण और गौरवपूर्ण और महान हिंदुत्ववादी परंपरा की ओर उन्मुखीकरण करती हैं। मुस्लिम धर्म के मतावलम्बी भी विकास के योज़ना से प्रभावित होकर हिंदुत्ववादी विचारधारा की ओर सकारात्मक रूप से देखते हुए विकल्प रूप में अपनाने लगे हैं। इस तरह यह परिकल्पना स्पष्ट रूप से छिब्बर और वर्मा के सिद्धांत की ओर जाती दिख रही है। इनके अनुसार विचारधारा और पहचान की राजनीति पितृत्व राजनीति की तुलना में आम जन समूह की दृष्टि से महत्वपूर्ण राजनीतिक आकार ले लिया है।